प्राणी

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान का **न्यूज़लेटर**

छठा संस्करण
अप्रैल-जून 2022

हमें फॉलो करें

छायाचित्र
मास का

भोजन का आनंद लेते हुए काकातुआ

NATIONAL ZOOLOGICAL PARK
NEW DELHI

छठा संस्करण

जून 2022

संपादक
धर्मदेव राय, आई एफ एस

संपादकीय टीम
अनामिका, आई एफ एस
मनोज कुमार,जीव विज्ञान सहायक
देविका, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
वाशु वर्मा, शिक्षा सहायक

प्रकाशित द्वारा
राष्ट्रीय प्राणी उद्यान, मथुरा रोड,
नई दिल्ली

रूपरेखा द्वारा
कान्सेप्ट एण्ड बिऑन्ड

आवरण चित्र
भोजन का आनंद लेते हुए काकातुआ
पक्षी

निदेशक की कलम से

अप्रैल से जून तक राष्ट्रीय प्राणी उद्यान का समाचार पत्र प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। राष्ट्रीय प्राणी उद्यान लुप्तप्राय प्रजातियों और आवासों के संरक्षण में सक्रिय, अग्रणी भूमिका निभाने के लिए मनोरंजन के केंद्र के रूप में विकसित हुआ है।

चिड़ियाघर लगातार संरक्षण, प्रजनन, वन्यजीवों, के व्यव्हार के अवलोकन के लिए सामूहिक रूप से अनुसन्धान एवं अध्यन क्षेत्र में सक्रिय भागीदारी निभाता है। पर्यटकों को प्राणी संरक्षण से अवगत करने के लिए चिड़ियाघर में समय-समय पर कई कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं इससे चिड़ियाघर के प्रति लोगों की रूचि एवं आम जनता से सम्बन्ध स्थापित होता है। स्कूली बच्चों के लिए अनेक गतिविधियां आयोजित की जाती हैं, जिससे उनमें पर्यावरण व उसके प्रति जागरूकता बढ़ती है, एवं बच्चों में पशुओं के प्रति संवेदनशीलता जाग्रत होती है। बच्चे भावी पीढ़ी है इसीलिए उनका अपने पर्यावरण के प्रति प्रबुद्ध होना आवश्यक है। चिड़ियाघर के कीपरों को समय समय पर जानवरों के बाढ़ो में पृथक पृथक बदलाव करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे प्राणी भिन्न भिन्न प्रकार की गतिविधियों में व्यस्त रहे और सक्रिय रहे। इसे और अधिक सार्थक बनाने के प्रयास में आपके सुझाव और प्रतिक्रिया से मदद मिलेगी।

विषयसूची:

1.फोटो फीचर

2. चिड़ियाघर की स्वरचित कहानी/कविताएँ

3. राष्ट्रीय प्राणी उद्यान खबरों में

4. महीने का वन्यजीव : गौरैया

5. महीने का वृक्ष : अमलतास का पेड़

6. बच्चो का कोना

8. शब्दकोष से फल-भक्षी

फोटोफीचर

विश्व पर्यावरण दिवस

ख़बरों में
राष्ट्रीय प्राणी उद्यान

पशु परिचारकों का प्रशिक्षण

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान के पशु परिचारकों के लिए एक प्रशिक्षण आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण का उद्देश्य मानव शक्ति को मजबूत करना और कर्मचारियों को उद्यान के जानवरों के लिए पृथक गतिविधियों को करने के लिए प्रोत्साहित करना था।

पृथ्वी दिवस समारोह

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में 22 अप्रैल 2022 को पृथ्वी दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस वर्ष पृथ्वी दिवस का विषय था "अपने ग्रह में निवेश करें"। कार्यक्रम में भाग लेने के लिए स्कूली छात्रों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसके बाद छात्रों को नेचर वॉक के लिए ले जाया गया और चिड़ियाघर के अधिकारियों के साथ बातचीत की गई।

Connect with Yoga & Wildlife

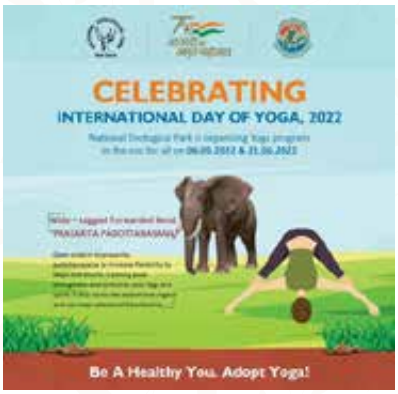

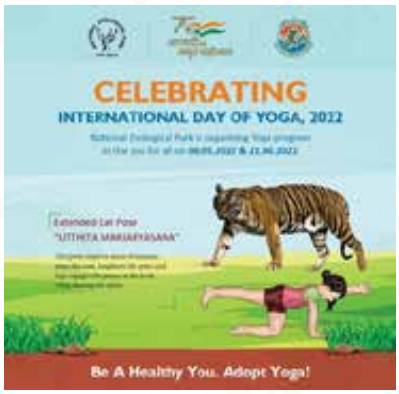

योग पर्व उत्सव

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में योग पर्व मनाया गया जहाँ 100 से अधिक लोगों ने आयोजित योगासन कार्यक्रम में भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में "सभी जीवन के लिए एक साझा भविष्य का निर्माण" विषय के साथ अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस, 2022 मनाया गया। छात्रों को चिड़ियाघर के भ्रमण के लिए ले जाया गया, जिसके बाद "जैव विविधता संरक्षण" विषय पर चित्रकला और निबंध प्रतियोगिता हुई।

विश्व पर्यावरण दिवस पहला दिन

स्वच्छता अभियान

चिड़ियाघर को प्लास्टिक मुक्त बनाने के उद्देश्य से, कर्मचारियों, छात्रों (जीएसडीपी), एनविस टीम के सदस्यों की भागीदारी के साथ चिड़ियाघर में और उसके आसपास के क्षेत्रों मे स्वच्छता अभियान आयोजित किया गया। लगभग 20 किलो प्लास्टिक एकत्र किया और श्रेडर मशीन के माध्यम से उसका पुनर्नवीनीकरण किया गया।

विश्व पर्यावरण दिवस दूसरा दिन

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में पर्यावरण दिवस मनाया गया। आयोजन का मुख्य आकर्षण स्कूली छात्र थे, जिन्होंने प्लास्टिक की बोतलों के पुनर्चक्रण सहित विभिन्न गतिविधियों का प्रदर्शन किया। इन गतिविधियों का उद्देश्य युवा मन को स्थायी जीवन शैली के लिए प्रोत्साहित करना था।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

माननीय प्रधान मंत्री के संदेश को मद्देनज़र रखते हुए, स्कूली बच्चों और राष्ट्रीय प्राणी उद्यान के कर्मचारियों की भागीदारी के साथ प्राणी उद्यान में योग दिवस समारोह आयोजित किया गया।

चिड़ियाघर की स्वरचित
कहानी/कविताएँ

चिड़ियाघर को सजाया है किसने

मै मस्त हुआ मनमस्त हुआ
चिड़ियाघर की छटा में लिप्त हुआ
मै घूम गया सब भूल गया
मेरा बाहर निकलना मुश्किल हुआ
मै मस्त --------
मन मोह लिया चिड़ियाघर ने।
अनुमान लगाना मुश्किल है।।
मैंने इधर उधर सब देख लिया।
यहाँ नज़र घुमाना मुश्किल है
मै मस्त --------
इन रंग बिरंगी छटाओं में।
जन्नत को उतारा है किसने ।।
यह सुन्दर रूप नज़ारों का।
चिड़ियाघर को सजाया है किसने।।
मै मस्त --------
यहाँ लाखो दर्शक आते हैं।
चलचित्र का लुफ्त उठाते।।
भंडार यहाँ है ओषधि का।
चुन चुन कर के ले जाते।।
मै मस्त --------
जीव जगत का हर प्राणी।
यह अपनी धुन में रहता है।।
आकाश फरिश्ता दुनिया का।
मानो चिड़ियाघर में बस्ता है।।
मै मस्त --------
खोज करो सब मिल जाय।
और मिले ज्ञान भंडार यहाँ।।
नहीं सफलता बिना गुरु के।
सुरेंद्र पाल अज्ञानी यहाँ।।

सुरेंद्र पाल सिंह
राष्ट्रीय प्राणी उद्यान

चिड़ियाघर की स्वरचित

कहानी/कविताएँ

मै कभी कभी सोचती हूँ कि,
जानवर इतने आत्मनिर्भर होते हैं
वे अपनी हालत पर दुखी होते नहीं है।
इंसान करता उनपर अत्याचार है,
फिर भी वो भगवान से शिकायत करते नहीं है।।

भगवान ने मनुष्यो को बनाया,
फिर पशु-पक्षियों से इस प्रकृति को सजाया।
जानवरो से मिलते दूध ने ही हमे ताकतवर बनाया ,
उनसे हमारी ठण्ड को मिटाये।
संतुलित किया संसार हमारा,
भिन्न-भिन्न पशु पक्षी द्वारा।

ज़िंदगी जानवर की बेहाल है,
पूछती हु खुदसे ये सवाल मैं।
मनुष्य क्यू बदल रहा चाल ढाल है,
जानवर की चमड़ी से बने सामान को खरीदना समझता
अपनी शान है।

पशु पक्षी, मानव सभी से मिलकर बनती हमारी,
खाद्य श्रृंखला है,
खाद्य श्रृंखला बिगड़ने से हमारी ज़िन्दगी पर
संकट आना तय है।

पशु पक्षी की रक्षा करना है हमको,
दुनिया की सुंदरता बचाना है सबको ।

मनुष्य तभी बनेगा महान,
जब मन में रखेगा जीवो के लिए सम्मान।

सीमा
(राष्ट्रीय प्राणी उद्यान)

चिड़ियाघर की स्वरचित
कहानी/कविताएँ

पर्यावरण

गाड़ा जब जमीन में उसको,
निकली कोमल डाली।
बढ़ते बढ़ते बन गयी,
लकड़ी हिम्मत वाली।

जब दिया इसने लोगो को हवा,
तब आया इसको बड़ा मज़ा।
स्वच्छ हवा का है क्या करना,
लोगो ने सोचा, यह तो है, उधार का झरना।

इतने संघर्ष करने के बाद,
दिखाई जिसने अपनी ईमानदार।
पर क्या मिली इसको अंत में,
लोगो कि वफ़ादार।

जब देखा इसने चारो तरफ ,
तो पाया प्रदुषण का ढेर,
यह देख कर भी
वह निभा रहा है, अपनी ईमानदारी।

खुशबु
(राष्ट्रीय प्राणी उद्यान)

ख़बरों में
राष्ट्रीय प्राणी उद्यान

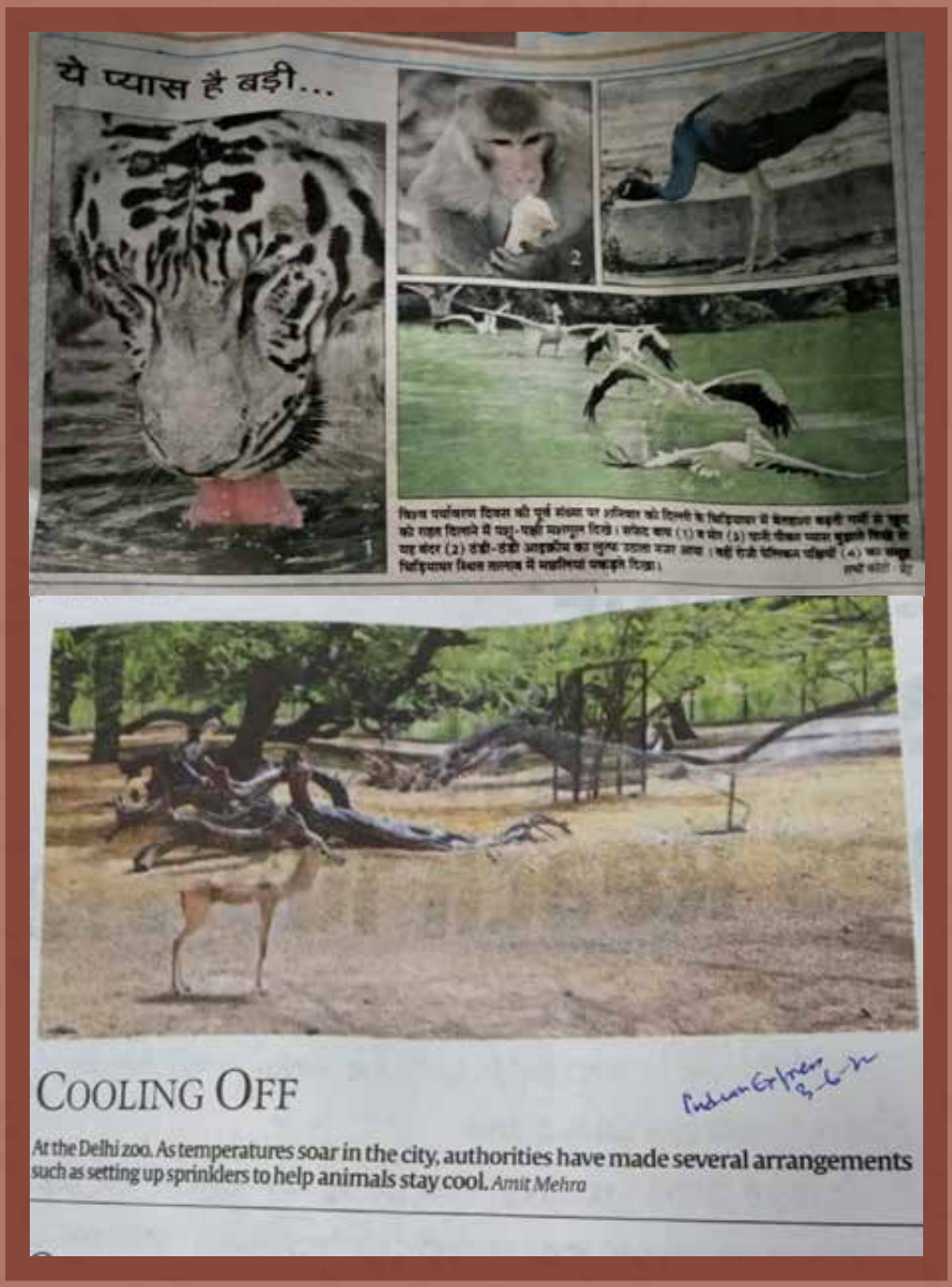

अन्य
चिड़ियाघरों की ख़बरें

मैसूर चिड़ियाघर में सफेद बाघिन तारा ने दिनांक 28.04.2022 को तीन शावकों को जन्म दिया है यह शावक सफेद नहीं है शावक और बाघिन दोनों स्वस्थ हैं। तारा को पशु विनिमय कार्यक्रम के तहत चेन्नई से लाया गया था तथा राहुल नर बाघ है जिसे जंगल से बचाव करके मैसूर लाया गया था।

महीने का वन्यजीव :
गौरैया

विश्व में पक्षियों की अनेक प्रजातियाँ पाई जाती है इन सबमें गौरेया भी प्रजाति है। इसे अलग-अलग जगह पर अलग-अलग नामों से जाना जाता है जिनमें चिड़िया, चिड़ी, चिमनी आदि मुख्य है। अंटार्कटिका, चीन और जापान को छोड़कर, हर महाद्वीप में निवास करने वाली घरेलू गौरैया दुनिया भर में फैली हुई है। भारत के भीतर, यह पूरे देश में, असम घाटी और असम पहाड़ियों के निचले हिस्सों तक पाया जाता है। पूर्वी हिमालय की ओर, प्रजातियों की जगह यूरेशियन वृक्ष गौरैया ने ले ली है। यह मानव आवासों के करीब रहने के लिए जाना जाता है, और इसलिए शहरों में सबसे अधिक पाई जाने वाली पक्षी प्रजातियों में से एक है। आवासीय कॉलोनियों, बगीचों, खेतों, कृषि क्षेत्रों, कार्यालय भवनों और यहां तक कि तेज गति वाले यातायात वाले राजमार्गों के पास गौरैयों के झुंड एक आम दृश्य हैं। गौरैया न केवल शहरों में सबसे अधिक पाई जाने वाली पक्षी प्रजातियों में से है, बल्कि सबसे अधिक प्रिय भी है।

शारीरिक संरचना

ये शंक्वाकार या शंकु के आकार की चोंच वाले छोटे और भूरे रंग के पक्षी होते हैं। कुछ, जैसे लाल सिर वाली चिपिंग और सफेद गले वाली गौरैया, के सिर पर विशिष्ट चिह्न होते हैं। अन्य, गीत गौरैया की तरह, भूरे और क्रीम रंग में रंगे हुए हैं।

सबसे छोटा शाहबलूत गौरैया है। यह 4.5 इंच लंबा है और इसका वजन आधा औंस (13.4 ग्राम) से भी कम है। सबसे बड़ा तोता-चोंच गौरैया है, जिसका वजन 1.5 औंस (42 ग्राम) है और इसकी लंबाई 7.1 इंच (18 सेमी) है।

नर गौरैया की पीठ का रंग लाल होता है और मादा गौरैया की पीठ पर भूरी धारियां होती है। इसकी लम्बाई 15-17 सेंटीमीटर तक होती है। इसके दो छोटे-छोटे पंख इसे उड़ने में मदद करते हैं। यह अपने पंखों की मदद से 25 मील प्रतिघंटा की स्पीड से उड़ सकती है। गौरैया जरूरत पड़ने पर पानी में तैर भी सकती है। मादा के आँखों के पास काले रंग का धब्बा पाया जाता है और नर के ये नहीं पाया जाता है। इससे नर और मादा में अंतर किया जा सकता है और इसकी औसतन आयु 5 से 7 वर्ष तक होती है। इसका वजन 30 से 40 ग्राम तक होता है।

भोजन

गौरैया ज्यादातर अनाज और बीज, साथ ही पशुओं का चारा खाती हैं और शहरों में छोड़े गए भोजन को खाती हैं। वे जो फसल खाते हैं उनमें मक्का, जई, गेहूं और ज्वार शामिल हैं। जंगली खाद्य पदार्थों में रैगवीड, क्रैबग्रास और अन्य घास और एक प्रकार का अनाज शामिल हैं। गर्मियों में, घरेलू गौरैया कीड़ों को खाती हैं और उन्हें अपने बच्चों को खिलाती हैं। वे हवा में कीड़ों को पकड़ते हैं, उन पर झपटते हैं, या घास काटने वाली मशीन का अनुसरण करते हैं या शाम को रोशनी का दौरा करते हैं।

घोंसला

गौरैया इमारतों और अन्य संरचनाओं जैसे स्ट्रीट लाइट, गैस स्टेशन की छतों, संकेतों और ट्रैफिक लाइट रखने वाले ओवरहैंगिंग फिक्स्चर में घोंसला बनाते है। वे कभी-कभी इमारतों की दीवारों पर चढ़कर लताओं में घोंसला बनाते हैं। हाउस स्पैरो घोंसले के बक्से के लिए मजबूत प्रतिस्पर्धी हैं। हाउस स्पैरो पेड़ों के छिद्रों में कुछ कम बार घोंसला बनाते हैं।

घोंसला विवरण

हाउस स्पैरो के घोंसले मोटे सूखे वनस्पतियों से बने होते हैं, जिन्हें अक्सर छेद में तब तक भरा जाता है जब तक कि यह लगभग भर न जाए। पक्षी फिर अस्तर के लिए पंख, तार और कागज सहित महीन सामग्री का उपयोग करते हैं। गौरैया कभी-कभी एक-दूसरे के बगल में घोंसले बनाते हैं, और ये पड़ोसी घोंसले दीवारों को साझा कर सकते हैं। गौरैया अक्सर अपने घोंसलों का पुन: उपयोग करते हैं।

गिरावट और संरक्षण

शहरीकरण, पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, आधुनिकीकरण, हानिकारक कीटनाशक छिड़काव, बदलती जलवायु, बढ़ते प्रदुषण आदि के कारण आज के समय में यह प्रजाति विलुप्त होने के कगार पर है। जंगल और कच्चे घर नहीं होने के कारण इसकी संख्या में भारी कमी देखने को मिल रही है। गौरैयों को बचाना हमारी प्रकति के लिए बहुत ही जरूरी है। इसके लिए हमें अपने घरों में छोटा सा बगीचा जरूर बनाना चाहिए और समय समय पर अपने घरों की छत पर अनाज के दाने और इनके पीने के लिए पानी की व्यवस्था जरूर करनी चाहिए। घरों में उपयोग होने वाली कीटनाशक दवाइयों का प्रयोग भी कम करना चाहिए।

महीने का वृक्ष :
अमलतास का पेड़

अमलतास का पौधा मुख्य रूप से भारत और पाकिस्तान के लिए स्वदेशी है, लेकिन दक्षिण-पूर्व एशिया, थाईलैंड, चीन, दक्षिण अफ्रीका, कोस्टा रिका, गुयाना के विभिन्न हिस्सों में भी व्यापक रूप से वितरित है, और कई उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में भी प्राकृतिक रूप से वितरित किया जाता है। मेक्सिको, इक्वाडोर, वेस्ट इंडीज, बेलीज, ऑस्ट्रेलिया और ब्राजील सहित कुछ हिस्सों। जीवंत पीले फूलों के कारण, अमलतास फूल को थाईलैंड के राष्ट्रीय फूल और केरल के राज्य राष्ट्रीय फूल के रूप में नामित किया गया है।

सामान्य जानकारी

अमलतास एक चमत्कारी जड़ी बूटी है जो पर्णपाती मूल की है। यह आमतौर पर मध्यम आकार का होता है जो 25 सेमी की ऊंचाई तक बढ़ता है। इसमें वैकल्पिक रूप से चिकने, अंडाकार आकार के, बालों वाले, पिनाट, पत्ते होते हैं, जिसके दोनों ओर 4-8 पत्रक होते हैं, फल पेंडुलस, बेलनाकार, अघुलनशील फली के रूप में 20-25 चमकदार काले, बीज वाले होते हैं। फलों की फली पकने पर मुख्य रूप से हरी होती है और परिपक्वता तक पहुंचने पर भूरे रंग की होती है, जबकि फूल आमतौर पर चमकीले पीले रंग के पेंटामेरस और आकार में थोड़े जाइगोमोर्फिक होते हैं और गुच्छों में होते हैं। पौधे आमतौर पर एक गहरी, अच्छी तरह से सूखा, मध्यम उपजाऊ रेतीली दोमट मिट्टी पसंद करते हैं, लेकिन यह शांत, लाल और ज्वालामुखी मिट्टी पर भी बढ़ सकता है। पौधे आमतौर पर वर्षा वन, मौसमी रूप से शुष्क जंगल, वुडलैंड, नदी के किनारे, गैलरी वन, जंगली घास के मैदान, सूखी झाड़ी, घने और तटीय क्षेत्रों, कम ऊंचाई, उद्यान, पार्क और यहां तक कि शहरी भूमि पर भी बढ़ते पाए जाते हैं।चालीस फीट की औसत ऊंचाई तक बढ़ते हुए, यह वसंत ऋतु में फूलता है जब यह अपनी पत्तियों को छोड़ देता है और सुनहरे पीले फूलों के गुच्छों जैसे लंबे अंगूर के गुच्छे में फट जाता है। “गोल्डन शावर” नाम फूलों के इस शानदार प्रदर्शन से लिया गया है। फूलों का मौसम गर्मियों में अच्छी तरह से फैलता है। फूल अत्यंत सुगंधित होते हैं और बड़ी संख्या में परागणकों (मधुमक्खियों) को आकर्षित करते हैं, जिनमें तितलियों की एक विशाल विविधता भी शामिल है।

चिकित्सीय उपयोगिता

एक शक्तिशाली आयुर्वेदिक जड़ी बूटी होने के नाते, अमलतास का व्यापक रूप से लगभग सभी आयुर्वेदिक रोगों में उपयोग किया जाता है जो समग्र प्रतिरक्षा को बढ़ाने के लिए निर्देशित होते हैं। विभिन्न प्रकार के संक्रमणों को कम करने के अलावा,

सजावटी जड़ी बूटी पाचन को बढ़ावा देने, चयापचय में सुधार, हृदय संबंधी कार्यों में सुधार, पाचन संबंधी समस्याओं को दूर करने और घावों के उपचार के लिए एक पारंपरिक उपाय भी प्रदान करती है। रक्त विकार, त्वचा रोग, भूख न लगना, गाउट या कब्ज हो, यह अत्यंत शक्तिशाली जड़ी बूटी सभी के लिए एक अद्भुत उपाय प्रदान करती है।

औषधीय प्रयोजनों में प्रयुक्त अमलतास के भाग

इस चमत्कारी पौधे के प्रत्येक भाग का चिकित्सीय और उपचारात्मक महत्व है। फलों के गूदे का उपयोग औषधीय प्रयोजनों और घावों को ठीक करने के लिए किया जाता है। पत्तियों का एक अभिन्न घटक होने के कारण मलहम, क्रीम और पुल्टिस तैयार करने के लिए उपयोग किया जाता है। छाल में शक्तिशाली कसैले गुण होते हैं और इसका उपयोग सूजन की स्थिति से राहत के लिए किया जाता है जबकि लकड़ी बेहद टिकाऊ होती है और निर्माण और फर्नीचर उद्योगों में उपयोग की जाती है। चमकीले पीले फूलों को हिंदू संस्कृति में पवित्र माना जाता है और अक्सर भारतीय उपमहाद्वीप के कई क्षेत्रों में भगवान विष्णु की पूजा के लिए उपयोग किया जाता है।

अंतर पहचानिये

उत्तर (Answer)

शब्द कोश से: **फल-भक्षी (Frugivorous)**

फल-भक्षी: फलों पर निर्भर रहने वाले जीव

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान

मथुरा रोड, नई दिल्ली-110 003
दूरभाष: +91-11-24358500, 24359825
ई-मेल: nzpzoo-cza@nic.in, वेब: www.nzpnewdelhi.gov.in

हमें फ़ॉलो करें

Design by conceptzandbeyond.com